International Journal of History 2021; 3(2): 127-128

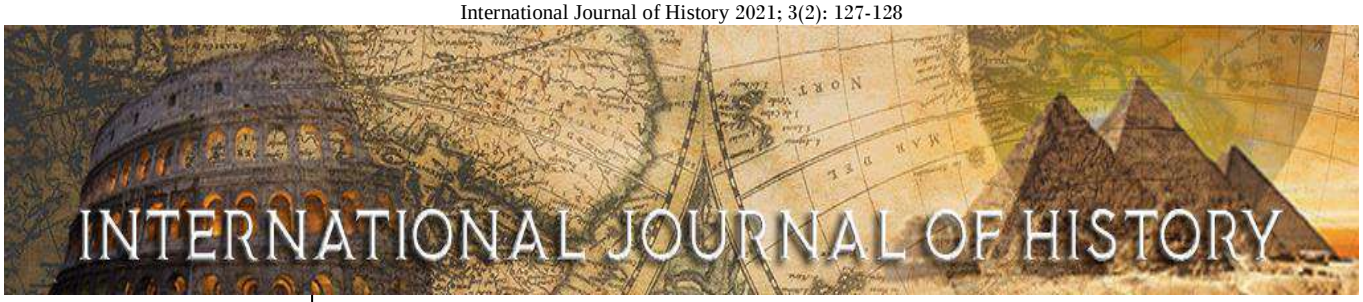


**E-ISSN:** 2706-9117
**P-ISSN:** 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2021; 3(2): 127-128
Received: 25-07-2021
Accepted: 27-09-2021

**स्मिता**
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
ल0 ना0 मिथिला वि0 वि0,
दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**स्मिता**
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
ल0 ना0 मिथिला वि0 वि0,
दरभंगा, बिहार, भारत

# भारतीय राष्ट्रवाद में स्वामी विवेकानंद का योगदान

## स्मिता

**सारांश**
स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के देदीप्यमान सितारे थे। उनका जीवन मानवता और भारतीयता के लिए प्रेरणास्पद था। वे उदारवाद हिन्दू धर्म के प्रर्वतक थे। उनकी सोच वेदान्त उपनिषद, आध्यात्मिकता, वैज्ञानिकता पर आधारित थी। उनका दिया गया संदेश सभी धर्मों की अच्छी बातों पर आधारित था। उनका भारतीय राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत था। बिना सच्ची राष्ट्रीयता के कोई भी देश विकास नहीं कर सकता। उनके अनुसार धर्म, समाज, संस्कृति, मानवता आदि राष्ट्रीयता के प्रमुख अंग हैं। विश्व हिंदू सभा, शिकागों में 1893 ई0 में स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म का परचम लहराया जिसके बाद पूरा विश्व उनके विचारों का कायल हो गया। उनका भारतीय राष्ट्रवाद नवहिन्दूवाद का प्रतीक था, जिसमें हिंदुत्व का उदारवाद, सहिष्णुता, कर्मवाद आदि सम्मिलित है। भारतीय स्वतंत्रता में तथा राष्ट्रवाद के विकास में स्वामी विवेकानंद के दर्शन का प्रमुख योगदान है।

**प्रस्तावना**
स्वामी विवेकानंद का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक है। इनका चिंतन हमें सौ साल के बाद भी ऊर्जा व जोश से भर देता है। विवेकानंद की सोच, उनका दर्शन और धार्मिक व्याख्याएँ आधुनिक व स्पष्ट हैं। धार्मिक होते हुए भी उनकी सोच प्रगतिशील और भविष्य की ओर देखने वाली है। अपने कर्म, जीवन, लेखन, भाषण और संपूर्ण प्रस्तुति में, उनका एक आदर्श प्रबंधक और कम्युनिकेटर का स्वरूप प्रकट होता है। आधुनिक काल में भारतीय समाज में जिन महापुरूषों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा, उनमें स्वामी विवेकानंद का नाम सबसे ऊपर है उन्होंने वेद उपनिषद की व्याख्या कर आधुनिक युग के सामने एक नया मार्ग सुझाया जिस पर चलकर मानव समाज ऊँचे लक्ष्यों की ओर अग्रसरित हो सकता है। अपने उपदेशों व क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से उन्होंने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना व स्वाभिमान की भावना को उत्पन्न किया।

राष्ट्रीय जागृति अर्थात भारत में रहने वाले समूचे जनसमुदाय के जागरण का मूलस्रोत स्वामी विवेकानंद के संदेशों में पाया जाता है। उनका राष्ट्रवाद राजनीतिक राष्ट्रवाद ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय पहचान व भारतीयों में सांस्कृतिक एकत्व का निर्माण करता था। विवेकानंद की धारणा थी कि राष्ट्र की शक्ति उसके जन साधारण पर निर्भर करती है और अपने कार्य के आरंभ से ही उन्होंने इस बात को ध्यान में रखा था। उन्होंने अधिकांश भारत का भ्रमण किया था ओर जहाँ भी वे जाते, वहाँ के लोगों के साथ तादाम्य स्थापित कर उन्हें अपना बना लेते थे। विवेकानंद ऐसे भारतीय थे जिनकी नजर में सभी भारतवासी भाई थे। उनका मानना था कि भारतीय लोग बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के है और इससे एकजुट होने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने करूणा, सेवा और त्याग को राष्ट्रीय आदर्श के रूप में मान्यता दी।

विवेकानंद का राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता और मानवतावाद पर आधारित था। उनके राष्ट्रवाद का आधार धर्म, भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता थी। लोगों का आध्यात्मिक एकीकरण और आत्मा की आध्यात्मिक जागृति ही उनके लिए राष्ट्रवाद थी। वेद और उपनिषद को भारतीय धर्म की आधार भूमि मानते थे। वे वेदांत को भारतीय दर्शन का अक्षय कोष मानते थे। उन्होंने वेदांत व उपनिषद के सिद्धांतों को भारतीय संस्कृति एवं भारतीय चरित्र के स्वभाव के अनुकूल बनाकर प्रस्तुत किया। रूढ़ियों, आडम्बरों और बाह्याचारों से ऊपर उठकर स्वामी विवेकानंद ने धर्म की विलक्षण व्याख्या की। अपनी वाणी व विचारों से भारतीयों में अभिमान जगाया कि हम अत्यंत प्राचीन सभ्यता के उत्तराधिकारी है। हमारे धार्मिक ग्रंथ सबसे उन्नत और हमारा इतिहास महान है। उन्होंने भारतीयों में आत्मगौरव की भावना को जागृत किया।

विवेकानंद का मानना था कि भारत में धर्म स्थिरता और राष्ट्रीय एकता के लिए एक रचनात्मक शक्ति है। उनके लिए गरीबों, दलितों, बीमारों व अज्ञानियों में भगवान देखना और उनकी सेवा करना

ही धर्म है। राष्ट्रवाद के उत्थान के लिए विवेकानंद का ध्यान युवाओं पर केंद्रित था। उन्हें युवा वर्ग पर अटूट विश्वास था व स्त्रियों के प्रति अगाध आस्था थी। विवेकानंद ने एक नये प्रगतिशील समाज की कल्पना की जिसमें धर्म और जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं हो।

मनुष्य मात्र की बुनियादी एकता और समता की प्रतिष्ठित करने वाला उनका यह सूत्र मानवतावाद की स्थापना का एक बड़ा अभियान था। समता के सिद्धांत का जो आधार विवेकानंद ने दिया, उससे सबल बौद्धिक आधार शायद ही अन्यत्र ढूंढ़ा जा सकता है।

विवेकानंद एक ऐसे युगपुरुष के रूप में सामने आते हैं जिनकी बातें आज के समय में ज्यादा प्रासंगिक होते हुए दीखती है। धर्म के स्वरूप को स्थापित कर उन्होंने जड़ता को तोड़ने का और नए भारत के निर्माण पर जोर दिया था। भारतीय समाज में आत्मविश्वास भर कर उन्हें हिंदुत्व के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान दिया जिसमें सभी धर्मों की अच्छी बातों को स्वीकारा गया है और सभी धार्मिक विचारों का आदर करने का भाव है। विवेकानंद का उदारवादी हिंदू धर्म, नवहिंदूवाद है, जिसमें सभी धर्मों व संस्कृतियों के उच्च आदर्शों का दर्शन है, जो वेदांत व उपनिष्द पर आधारित है।

विवेकानन्द ने 1893 में शिकागों में संपन्न 'विश्व धर्म सम्मेलन' में लोगों को यह बताया कि वेदांत केवल हिंदुओं का ही नहीं अपितु सभी मनुष्यों का धर्म है। उन्होंने अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद के संतुलन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यदि पश्चिम के भौतिकवाद एवं पूर्व के अध्यात्मवाद का सम्मिश्रण कर दिया जाये तो यह मानव जाति की भलाई का सर्वोत्तम मार्ग होगा। हिन्दू धर्म की नयी उदारवादी व्याख्या कर अपने विचारों तथा चिंतन से सारी दुनिया को परिचित करवाकर उन्होंने हिंदू धर्म का परचम लहराया।

विवेकानंद भारत को एक जागृत एवं प्रगतिशील राष्ट्र बनाना चाहते थे। उन्हें भारतीय जनमानस की शक्ति पर पूर्ण विश्वास था। उन्होंने राष्ट्र की युवा पीढ़ी को राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित किया। युवाओं में उन्होंने आत्मविश्वास, गौरव की भावना को जागृत किया। वे चाहते थे कि युवा वर्ग आगे आएं और भारत को विश्व के अग्रणी देशों की पंक्ति में सबसे आगे लाने के लिए अपनी ओर से हर संभव प्रयास करें।

स्वामी विवेकानंद कट्टर राष्ट्रवादी थे किंतु उनका राष्ट्रवाद मानवता का पोषक था। उनके राष्ट्रवाद का लक्ष्य था समग्र मानव–जाति की सेवा के साथ–साथ भारतीयों की दीनता और अज्ञानता को दूर करना। स्वामीजी का राष्ट्रवाद धर्म और कर्म के दो मुख्य आधारों पर खड़ा है। राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त दोषों को दूर करने के लिए उन्होने धर्म को मान्यता दी। धर्म को वो मनुष्य में निहित दैवत्व का प्रतीक मानते थे और उसे अनुभव और अनुभूति की वस्तु स्वीकार करते थे। उन्होंने सभी धर्मो के मूलभूत एक तत्व की समानता का अनुभव किया। मनुष्य के समग्र विकास के लिए स्वामी जी ने वेदांत का सहारा लिया और अद्वैत वेदांत को व्यावहारिक बनाने के लिए उसकी वैज्ञानिक व्याख्या की। विवेकानंद कहते थे कि विभिन्न धर्मों के प्रतीक भले ही अलग–अलग हो परंतु उनका सार एक ही है। विशेषकर हिन्दू धर्म ने इस विविधता को मान्यता दी है और इस यथार्थ को समझा है। उनका राष्ट्रवाद मिश्रित और बहुलतावादी था। वस्तुतः विवेकानंद ने भारतीयों के उत्थान के लिए जिस राष्ट्रवाद की कल्पना की थी, उसके मूल में मानवतावाद, आध्यात्मिक विकास और सांस्कृतिक नवजागरण है जिसे प्राप्त करने के लिए उन्होंने वेदांत का सहारा लिया। उनका राष्ट्र निर्माण व्यक्ति निर्माण से शुरू होता है। राष्ट्र निर्माण का कार्य अपने नागरिकों के व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण से प्रारंभ होता है। विवेकानंद का मानना था कि देश की युवा पीढ़ी अगर बलशाली होगी तो वे अपने मार्ग में आने वाले किसी भी विरोध का सामना कर सकेंगे। युवाओं व प्रत्येक भारतीय को उन्होंने कर्मवाद का संदेश दिया। उन्होंने युवाओं में भारतीय होने का गर्व पैदा कर किया। साथ ही भारतीय जनमानस को प्रेम, दया, करुणा, सेवा, आत्मविश्वास, साहस आदि का महत्व समझाया। वेद, उपनिषद् व पुराणों के द्वारा उन्होंने पुरी दुनिया में भारतीय चिंतन की नवीन व्याख्या कर, भारतीय गौरव को पुनः स्थापित किया।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारत में ही नहीं बल्कि विश्व मानवता के हित के लिए सार्थक है। उनके द्वारा प्रतिपादित दर्शन को किसी एक देश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है। उन्होंने विश्व के समस्त देशों व मनुष्यों को मानवता को संदेश दिया था। वे चाहते थे कि विश्व के सभी लोग एक दूसरे के धर्मों का सम्मान करें तथा समझें। उन्होंने विश्व–बंधुत्व की भावना को उजागर किया था। वास्तव में विवेकानंद विश्व–गुरु थे। इन्होंने पाश्चात्य देश में, वहां के निवासियों के समक्ष भारतीय धर्म की व्याख्या कर, इसकी महानता को स्थापित किया था। विवेकानंद का स्पष्ट मत था कि केवल सर्वधर्म समभाव से मानवता का कल्याण हो सकता है। इसमें नैतिकता, मानवतावाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का एक सर्वभौमिक रूप है। विवेकानंद ने अपने विचार, आदर्श व सिद्धांत के द्वारा भारत ही नहीं, अपितु विश्व को भी एक नई दिशा प्रदान की थी। हिंदूधर्म में विद्यमान दर्शन, मानवता, विश्व–बंधुत्व व सहिष्णुता, राष्ट्रवादी विचारों से लोगों को प्रभावित किया था।

वस्तुतः विवेकानंद द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद आध्यात्मिकता व नैतिकता पर आधारित है जो भारतीयों की जीवन–शक्ति है। विवेकानंद को संकल्प शक्ति, विचारों की ऊर्जा, अध्यात्म व आत्मविश्वास की मिसाल कहा जा सकता है। उन्हें भारतीय राष्ट्रवाद का मसीहा कहा जा सकता है।

## निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद ने अपनी प्रेरक बातों से भारतीयों में स्वाधीनता के लिए जान फूंक दी जो धर्म तथा कर्म पर आधारित था। भारतीय राष्ट्रवाद में स्वामी विवेकानंद का योगदान अविस्मरणीय है। आनेवाले समय में उन्हें लोग सदा पूजते रहेंगे।

## संदर्भ

1. आधुनिक भारत का इतिहास/राजीव गर्ग
2. मैं विवेकानंद बोल रहा हूँ/सं0 गिरिराज शरण
3. पाञ्चजन्य पत्रिका/7 जुलाई 2013
4. विवेक–ज्योति पत्रिका/7 जुलाई 2019
5. योद्धा सन्यासी विवेकानंद/हंसराज रहबर
6. इंटरनेट व अन्य